

DPN 6243

Title : कुजाग्नि यज्ञविधि / KUJĀGNI YAJÑAVIDHI

Run. No. 6934

Cat. No. 58

Micro. No.

Subject तान्त्रिक कर्मकाण्ड
Tāntrika karmakāṇḍ Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 29 x 11.3

Folios 17

Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

Fol. 1b: अस्य मुक्तकार्य कुजाग्नि यज्ञा रमे कर्म कर्तुं श्रीकृष्णमार्तण्डायार्घ्ये नमः ॥

On the margin: श्रीमिश्रित.

10

5

0

२ भा मि मि न

[illegible]

२ श्री सिद्धि

स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उ वा य वं ०० ॥ ॐ दं ॥ उ (ग्व त व ल्क्ष य स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उ गृ ह्वा ये ०० ॥ ॐ दं ॥ उ म धा ये ०० ॥ ॐ
दं ॥ उ पु क्ता ये स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उ क्षा व ल्क्ष ये ०० ॥ ॐ दं ॥ उ स द स स्य न य स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उ अ नू म न ०० ॥ ॐ
दं ॥ स्वाग ४ ॥ २ ॥ ॥ उ सा म वं दाय ०० ॥ ॐ दं ॥ उ सूर्या य ०० ॥ ॐ दं ॥ उ दि वं स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उ व क्त व
ल्क्ष य ०० ॥ ॐ दं ॥ उ गृ ह्वा ये ०० ॥ ॐ दं ॥ उ म धा ये ०० ॥ ॐ दं ॥ उ पु क्ता ये ०० ॥ ॐ दं ॥ उ क्षा व ल्क्ष ये ००
॥ ॐ दं ॥ उ स द स स्य न य ०० ॥ ॐ दं ॥ उ अ नू म न ०० ॥ ॐ दं ॥ स्वाग ४ ॥ ३ ॥ ॥ उ अ थ र्क्ष वं दाय ००
॥ ॐ दं ॥ उ दि ग्म ४ ०० ॥ ॐ दं ॥ उ व नु म स ०० ॥ ॐ दं ॥ उ कृ ष्ण व ल्क्ष य ०० ॥ ॐ दं ॥ उ गृ ह्वा ये ०० ॥ ॐ
दं ॥ उ म धा ये ०० ॥ ॐ दं ॥ उ पु क्ता ये ०० ॥ ॐ दं ॥ उ क्षा व ल्क्ष ये ०० ॥ ॐ दं ॥ उ स द स स्य न य ०० ॥ ॐ दं
॥ उ अ नू म न य ०० ॥ ॐ दं ॥ अ नू म न य स्वाग ४ ॥ ४ ॥ ॐ ति वं दा कृ ति ४ ॥ ॥ उ व द्म ल ०० ॥ उ नू दाय ०० ॥ उ
वि बू व ०० ॥ उ णी ण नाय ०० ॥ स्वाग ४ ॥ ॥ न न मि यं वा कृ ति ॥ उ रू ४ स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उ उ व ४ स्वाहा ॥ ॐ दं ॥ उ स्व

७५

[illegible]

ॐ बुद्धाय ००॥ ॐ पुनीताय स्वाहा ॥ ॐ ह्येन्द्राय ००॥ ॐ जगन्नाथाय ००॥ ॐ यमाय ००॥ ॐ मेरुस्थाय ००॥ ॐ वेङ्कटाय ००॥ ॐ वायव्य ००॥ ॐ कूटनाथ ००॥ ॐ श्रीलालाय ००॥ ॐ अक्षय ००॥ ॐ उच्चय ००॥ ॐ तन्नि ००॥ ॐ मरुक्कालाय ००॥ ॐ बभ्रुय ००॥ ॐ पुत्रभुय ००॥ ॐ अर्जु ००॥ ॐ विष्णु ००॥ ॐ विष्णुनाथ ००॥ ॐ कुरुयालाय ००॥ ॐ गलयन्त्र ००॥ ॐ गुत्र ००॥ ॐ आगि ००॥ ॐ कुरुयालाय

5

10

15

20

25

30

२ श्रीमिहि न

११

कु१

आ१

यथाविधान्नहि न त्वादिः ॥ धनं ४

ॐ नैऋत्यवमानन्दवयवमाङ्गुल्यस्वाहा ॥ नैऋत्यवमानन्दवयवमाङ्गुल्यस्वाहा ॥

११

२५॥सिद्धि